ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र

- इस नदी को बांग्लादेश में जमुना, चीन में यारलुंग जांगबो जिआंग, तिब्बत में सांगपो कहते हैं।
- यह नदी मानसरोवर के निकट बुराक देश (तिब्बत हिमालय) के अंगी ग्लेशियर से निकलती है।
- अपने उत्पत्ति क्षेत्र से पूर्व की दिशा में मुख्य हिमालय तथा कैलाश श्रेणी के मध्य 1100 किलोमीटर प्रवाहित होती है।
- तिब्बत में प्रवाहित होने के दौरान इसमें कई सहायक नदियां आकर मिल जाती है जिनमें से कुछ प्रमुख है- राका सांगपो नदी, ल्हासा नदी, न्यांग नदी, न्यांग क्यू नदी।

- तिब्बत में पाई क्षेत्र को पार करने के बाद, यह नदी उत्तर तथा उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ जाती है।
- ग्याला पेरी एवं नामचा बरवा पर्वत के बीच में गहरे गोर्ज का निर्माण करती है।
- उसके बाद नदी दक्षिण और दक्षिण पश्चिम की ओर मुड़कर गहरे, यारलुंग सांगपो ग्रैंड कैन्यन में से बहती हुई अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है।
- अरुणाचल प्रदेश में से देहांग या सियांग नदी के नाम से पुकारते हैं।

- असम घाटी के मुंह पर, इस नदी में लोहित नदी तथा दिबांग नदी आकर मिल जाती है।
- यहां से से ब्रह्मपुत्र नदी के नाम से जाना जाता है।
- डिब्रूगढ़ तथा लखीमपुर जिले के मध्य नदी दो धाराओं में बंट जाती है- उत्तरी धारा को खैर कुटिया तथा दक्षिणी धारा को ब्रह्मपुत्र धारा के नाम से जानते हैं।
- 100 किलोमीटर प्रवाहित होने के बाद दोनों नदियां पुनः मिल जाती है और विश्व के सबसे बड़े नदीय द्वीप माजुली का निर्माण करती हैं।

- आसाम में डुबरी को पार करने के बाद यह नदी बांग्लादेश में जमुना के नाम से प्रवेश करती है।
- बांग्लादेश के उत्तरी भाग में तीस्ता नदी में आकर मिल जाती है।
- यहां पर यह पुनः दो भागों में बंट जाती है-
- पश्चिमी शाखा जमुना के नाम से जानी जाती है जोकि ग्वालदो के निकट पदमा से मिल जाती है।
- पूर्वी शाखा ब्रह्मपुत्र के नाम से जानी जाती है जिसमें मेघना नदी आकर मिल जाती है।
- पदमा और मेघना चांदपुर के निकट मिलकर भोला नामक स्थान पर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है

- **ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियां :-**
  - **दिबांग नदी**
  - **लोहित नदी**
  - **मानस नदी**
  - **सुबनसिरी नदी**
  - **तीस्ता नदी**

धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it